बसंत

भाग 3

कक्षा 8 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

फरवरी 2008 माघ 1929

पुनर्मुद्रण

जनवरी 2009 माघ 1930

जनवरी 2010 माघ 1931

नवंबर 2010 कार्तिक 1932

जनवरी 2012 माघ 1933

नवंबर 2012 कार्तिक 1934

अक्तूबर 2013 आश्विन 1935

दिसंबर 2014 पौष 1936

दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937

दिसंबर 2016 पौष 1938

दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939

जनवरी 2019 माघ 1940

अगस्त 2019 श्रावण 1941

PD 560T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा हाई-टेक ग्राफ़िक्स, एफ़-23, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज-I, नयी दिल्ली - 110 020 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-817-1

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *बिबाष कुमार दास*
संपादक	: *नरेश यादव*
सहायक उत्पादन अधिकारी	: *दीपक जैसवाल*
आवरण एवं सज्जा	: *अरविंदर चावला*
चित्रांकन	: *सुनील कुमार*

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में

© NCERT not to be republished

बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
30 नवंबर 2007

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *पूर्व प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक* (हिंदी), निगम प्राथमिक विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली

इंदिरा वेद, *टी.जी.टी.* (हिंदी), सरदार पटेल विद्यालय, लोदी स्टेट, नयी दिल्ली

करुणा शर्मा, *पूर्व पी.जी.टी.* (हिंदी), ई–68, ईस्ट अंसारी नगर, नयी दिल्ली

चंपा श्रीवास्तव, *अध्यक्ष,* हिंदी विभाग, फिरोज गांधी कॉलेज, रायबरेली (उ.प्र.)

नीरजा शर्मा, *टी.जी.टी.*, (हिंदी), सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–14, प्रशांत विहार, रोहिणी, दिल्ली

नूतन झा, *अध्यापिका,* मीरांबिका स्कूल, नयी दिल्ली

प्रभात कुमार झा, अंकुर, सर्वप्रिय विहार, नयी दिल्ली

प्रेमपाल शर्मा, 96 कला विहार, मयूर विहार, फ़ेज़–I, दिल्ली

बलराम, सी–69, उपकार अपार्टमेंट्स, मयूर विहार, फ़ेज़–I, दिल्ली

रामचंद्र, *वरिष्ठ प्रवक्ता* (हिंदी), भारतीय भाषा केंद्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

संजीव, ए–65, गली–8, प्रताप नगर, मयूर विहार, दिल्ली

सुशील शुक्ल, एकलव्य, अरेरा कालोनी, भोपाल, मध्य प्रदेश

सदस्य समन्वयक

प्रमोद कुमार दुबे, *वरिष्ठ प्रवक्ता,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को[redacted] सम्मिलित किया गया है, उसके लिए उन साहित्यकारों, उनके परिजनों और[redacted] प्रकाशन–संस्थाओं के प्रति परिषद् आभार व्यक्त करती है। अध्याय सोलह[redacted] *पानी की कहानी* में दिए गए चित्रों के लिए परिषद् निमीषा कपूर के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

इसके निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* सचिन कुमार और इन्द्र कुमार, *कॉपी एडीटर* राम जी तिवारी और पूजा नेगी तथा *प्रूफ़ रीडर* कंचन शर्मा और करुणा भारद्वाज की आभारी है।

© NCERT
not to be republished

शिक्षक से

यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम के अनुरूप निर्मित हुई है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। इस नाते पाठ्यसामग्री के चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। इसके लिए भाषा-शिक्षण की प्रचलित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, बाज़ार, इतिहास इत्यादि के प्रति विद्यार्थी को जिज्ञासु बनाने का प्रयास किया गया है। चूँकि भाषा की भूमिका सर्वत्र है और ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से मनुष्य का संपर्क होता रहता है, अतः भाषा का व्यवहार भी सभी क्षेत्रों में आवश्यक होता है। शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न विषयों के लिए भाषा माध्यम की भूमिका निभाती है। यह आवश्यक हो जाता है कि समेकित विषयों से भरे-पूरे प्रासंगिक पाठों का चयन हो और प्रश्न-अभ्यास निर्माण करते हुए यह ध्यान रखा जाए कि पाठ के अंतर्गत आए विषयों से संबंध रखनेवाले अन्य विषयों को भी उकेरा जाए जिससे विद्यार्थी समग्र रूप से तर्कसंगत विचार करने की क्षमता अर्जित कर सके।

हिंदी के भाषा संसार में अनेक बोली-भाषा और क्षेत्रीय प्रभावों का समावेश है। ये भाषा संसार के पोषक अंग हैं और धरोहर भी। जब पाठों में आंचलिक पहचान के साथ रचे गए किसी साहित्य को रखा जाता है तब उसमें लोक प्रचलित शब्द, मुहावरे और क्षेत्रीय परिवेश का चित्रण होता है। कथ्य और कथा परिवेश को तो पाठक पहचान लेता है परंतु भाषा के क्षेत्रीय तत्व अन्य क्षेत्र के पाठकों के लिए अपरिचित होते हैं। इस तरह का साहित्य भाषा के स्तर पर नया अनुभव भी देता है। पाठ चयन करते हुए विषयों के साथ विधाओं का स्तबक बनाने का प्रयास किया गया है। इस गुलदस्ते में यदि एक विषय निबंध की विधा में है तो उसी विषय को दूसरे तेवर में प्रस्तुत करने वाली कविता के चयन का प्रयास भी किया गया है। विविध भाषा-परिवेशों से विद्यार्थी को परिचित कराना भाषा शिक्षण की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। पुस्तक में इसकी पूर्ति का प्रयास किया गया है। पाठ केंद्रित प्रश्नों के साथ

© NCERT
not to be republished

आसपास के ज्ञान–क्षेत्रों और शब्दों को भी शामिल किया गया है। भाषा का परिवेश वास्तव में बहुभाषिक होता है। इसलिए बोलचाल में आनेवाले शब्दों को भी **भाषा की बात** करते हुए अन्य भाषा के बहुप्रचलित शब्दों की तरह ही लिया गया है। उच्च कक्षाओं में गहरे अर्थों में पढ़ाई जानेवाली किसी रचना को सामान्य अर्थ में भी आसानी से पढ़ा–समझा जा सकता है। ऐसी रचनाओं को विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर का ध्यान रखते हुए प्रश्न–अभ्यासों के माध्यम से सरल बनाने का प्रयास किया गया है। प्रश्न–अभ्यास पाठों की विषयवस्तु, शिक्षण बिंदु और उसके परिवेश को एक सीमा तक स्पष्ट करते हैं।

पाठ्यक्रम में निर्धारित व्याकरण के महत्वपूर्ण बिंदुओं को प्रश्न–अभ्यासों में यथास्थान **भाषा की बात** करते हुए रखा गया है जिससे व्याकरण की पूर्ति होती है।

पाठों के प्रमुख संदर्भों को चित्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। ये चित्र रूप–सज्जा मात्र नहीं हैं अपितु पाठों के अधिगम में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस किताब में विद्यार्थी की **स्वाभाविक अभिव्यक्ति**, **कल्पनाशीलता**, **भाषिक कौशलों** और **सोच** को आसपास के परिवेश में ही विकसित करने हेतु उसकी सृजनशील गतिविधियों को बढ़ावा देनेवाले अभ्यास दिए गए हैं। **अनुमान और कल्पना** तथा **कुछ करने को** का यही उद्देश्य है। साथ ही कुछ प्रश्न–अभ्यासों में पाठ के स्वभाव का आधार लेकर उपशीर्षक रखे गए हैं ताकि प्रश्न–अभ्यास के ढाँचे में खुलापन आ सके। कुछ सामग्री **केवल पढ़ने के लिए** दी गई है जो कहीं तो पाठ के विषय को पोषित करती है और कहीं रचना की विविधता प्रस्तुत कर विद्यार्थी की रुचि का विस्तार करती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में दक्षता व रुचि को प्रोत्साहित करने तथा कक्षा के बाहर का जीवन–जगत कक्षा में लाने एवं उसे चर्चा का विषय बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

पाठ्यपुस्तक के अठारह पाठों में विविध विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। इनके अतिरिक्त **केवल पढ़ने के लिए** दी गई पठन सामग्री से भी पाठ्यपुस्तक की सर्वांग आपूर्ति होती है और हिंदी साहित्य का परिचय भी मिलता है। कबीर की साखियाँ, सूर के पद और सुदामा चरित जहाँ भक्तियुग के लोकप्रिय काव्य के उदाहरण हैं, तो निराला की कविता **ध्वनि** का संपादित अंश, दिनकर की कविता **भगवान के डाकिए,** भगवतीचरण वर्मा की

© NCERT not to be republished

कविता **हम दीवानों की हस्ती** आधुनिक कविता के नमूने और जया जदवानी की कविता **यह सबसे कठिन समय नहीं** समकालीन कविता की एक बानगी है। कबीर की **साखियों** में स्वबोध, सूर के **पदों** में वात्सल्य, **सुदामा चरित** में मित्रता, **ध्वनि** कविता में प्रकृति के प्रति मानवीय संवेदना, **भगवान के डाकिए** में प्रकृति की विविधता में संवादी अंतर्संबंध, **दीवानों की हस्ती** में उत्साह और अलमस्ती तथा **यह सबसे कठिन समय नहीं** कविता में जिजीविषा मूल भाव के रूप में निहित है।

कहानियों में कामतानाथ की कहानी **लाख की चूड़ियाँ** शहरीकरण और औद्योगिक विकास से ग्रामोद्योगों के उजड़ने की पीड़ा को चित्रित करती है। यह कहानी नाते-नेह में रचे-बसे गाँवों के सहज संबंधों में बिखराव और सांस्कृतिक ह्रास के आर्थिक कारणों को स्पष्ट करती है। इस्मत चुगताई की कहानी **कामचोर** एक पारिवारिक समस्या को आधार बनाकर लिखी गई है जिसमें ऊधम मचानेवाले बच्चों से होनेवाली परेशानी की रोचक प्रस्तुति है। यह कहानी एक सुव्यवस्थित परिवार की माँग पैदा करती है। अन्नपूर्णानंद की कहानी **अकबरी लोटा** हास्य-व्यंग्य से भरी हुई अत्यंत रोचक कहानी है। निर्मल वर्मा की कहानी **बाज और साँप** एक बोध कथा है। सृंजय की कहानी **टोपी** लोक कथा का पुनर्सृजन है। इस कहानी में गहरा सामाजिक सरोकार है। यह सत्ता से जनता के संबंधों की समीक्षा करती है। नन्हीं गौरैया के दृढ़ निश्चय और प्रयासों से प्रत्येक व्यक्ति प्रेरित हो सकता है और अपने दायित्व को समझ सकता है। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की रचना **बस की यात्रा** यातायात की दुर्व्यवस्थाओं पर व्यंग्य करती है। अरविंद कुमार सिंह के निबंध **चिट्ठियों की अनूठी दुनिया** में संवाद माध्यमों की विकास यात्रा का रोचक विवरण है। ललित निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध **क्या निराश हुआ जाए** विभिन्न दुर्व्यवस्थाओं और चारित्रिक मूल्यों की गिरावट के बीच सकारात्मक तथ्यों को रेखांकित करता है। प्रदीप तिवारी के निबंध **जब सिनेमा ने बोलना सीखा** में भारतीय सिनेमा के इतिहास के एक महत्वपूर्ण पड़ाव को उजागर किया गया है। यह निबंध मूक सिनेमा के सवाक् सिनेमा में विकसित होने की कहानी बयान करता है जो शिक्षा की नज़र से भी अर्थवान है। सुप्रसिद्ध पत्रकार पी. साईनाथ की अंग्रेजी से अनूदित रपट **जहाँ पहिया है** में स्त्री-सशक्तीकरण का एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। रामचंद्र तिवारी का कथात्मक निबंध **पानी की कहानी** हिंदी में विज्ञान विषयक लेखन का एक उदाहरण है

जिसमें पानी का मानवीकरण करते हुए उसकी विभिन्न अवस्थाओं का विवरण दिया गया है। इस निबंध से जल के निर्माण और अस्तित्व चक्र की जानकारी मिलती है।

केवल पढ़ने के लिए में एक सामान्य व्यक्ति के अदम्य साहस और कार्य को रेखांकित करती रोचक जीवनी **पहाड़ से ऊँचा आदमी** है। सिनेमा के संदर्भ में तकनीकी विकास की संभावनाओं को **कंप्यूटर गाएगा गीत** नामक लेख प्रस्तुत करता है और **हम पृथ्वी की संतान** नामक आलेख पर्यावरण के प्रति जागरूक करता है। पुस्तक में दी गई इस अतिरिक्त पठन सामग्री का उद्देश्य पाठों के विषयों को विस्तार देने के साथ-साथ समसामयिक विषयों की जानकारी देना भी है।

शिक्षकों से आशा है कि वे पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करेंगे और आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँगे। परिषद् पुस्तक के परिष्कार हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत करेगी।

© NCERT not to be republished

विषय सूची

आमुख			iii
शिक्षक से			vii
1.	ध्वनि (*कविता*)	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	1
2.	लाख की चूड़ियाँ (*कहानी*)	कामतानाथ	5
3.	बस की यात्रा (*व्यंग्य*)	हरिशंकर परसाई	13
4.	दीवानों की हस्ती (*कविता*)	भगवतीचरण वर्मा	20
5.	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया (*निबंध*)	अरविंद कुमार सिंह	23
	• चिट्ठियाँ (*कविता*) (केवल पढ़ने के लिए)	रामदरश मिश्र	30
6.	भगवान के डाकिए (*कविता*)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	31
	• कदम मिलाकर चलना होगा (*कविता*) (केवल पढ़ने के लिए)	अटल बिहारी बाजपेयी	34
7.	क्या निराश हुआ जाए (*निबंध*)	हजारी प्रसाद द्विवेदी	37
8.	यह सबसे कठिन समय नहीं (*कविता*)	जया जादवानी	45
	• पहाड़ से ऊँचा आदमी (*जीवनी*) (केवल पढ़ने के लिए)	सुभाष गाताड़े	48
9.	कबीर की साखियाँ	कबीर	51
10.	कामचोर (*कहानी*)	इस्मत चुगताई	54
11.	जब सिनेमा ने बोलना सीखा	प्रदीप तिवारी	62
	• कंप्यूटर गाएगा गीत (*आलेख*) (केवल पढ़ने के लिए)	ऋत्विक घटक	68

© NCERT not to be republished

12.	सुदामा चरित (*कविता*)	नरोत्तमदास	70
13.	जहाँ पहिया है (*रिपोर्ताज*)	पी. साईनाथ (अनु.)	74
	• पिता के बाद (*कविता*) (केवल पढ़ने के लिए)	मुक्ता	82
14.	अकबरी लोटा (*कहानी*)	अन्नपूर्णानंद वर्मा	83
15.	सूर के पद (*कविता*)	सूरदास	95
16.	पानी की कहानी (*निबंध*)	रामचंद्र तिवारी	98
	• हम पृथ्वी की संतान (*आलेख*) (केवल पढ़ने के लिए)	प्रभु नारायण	109
17.	बाज और साँप (*कहानी*)	निर्मल वर्मा	112
18.	टोपी (*कहानी*)	संजय	119
	शब्दकोश		131

© NCERT not to be republished